भगवान
श्री वेंकय्या स्वामी

(आधुनिक संत के जीवन का सार)

तेलुगू संकलन कर्ता
श्री पी. सुब्बरामय्या
सेवानिवृत अध्यापक, गोलगमूडि

अनुवादक
श्री द.दा.मेश्राम, हिन्दी अधिकारी, कल्पाक्कम
श्रीमती पद्मावतम्मा, सेवानिवृत अध्यापिका (हिन्दी), कावलि

प्रकाशित कर्ता:
श्री साईं मास्टर सेवा ट्रस्ट,
गोलगमूडि - 524 321,
नेल्लूर जिला,
आंध्र प्रदेश, भारत

ओम

समर्पण

यह कार्य बहुत ही आदर सहित परम मनस्वी को समर्पित हैं जिन्होंने मुझे इस मानव जीवन में मेरी नम्र क्षमता से समर्थ सद्गुरु की सेवा करने का यह पावन अवसर प्रदान किया है।

और उनका रहस्य उद्घाटन हमारे पारिवारिक देवता भगवान श्री वेंकटेशवर स्वामी जी की कृपा से किया है।

और मेरे माता - पिता और भाई जिनके आशीर्वाद से महा विद्यालयीन शिक्षण पूर्ण किया और अपनी जीविका के लिए एक सन्माननीय शिक्षक व्यवसाय अपनाया।

और आचार्य श्री भरद्वाज गुरु जी के पद कमल पर समर्पित हैं जिन्होंने गोलगमूडि के भगवान श्री वेंकय्या स्वामी के स्वरूप में भगवान दत्त के पावन कमल चरण में निर्देश दिया है।

और भगवान साई नाथ को समर्पित है जिन्होंने मुझे मेरी प्रार्थना और पूजा भगवान श्री वेंकय्या स्वामी के श्री कमल चरण में अर्पित करने का निर्देश दिया है।

और भगवान श्री वेंकय्या स्वामी महराज को समर्पित है जिन्होंने मुझे अपनी शरण में लेकर मेरी आध्यात्मिक साधना के स्वरूप में उनकी पावन लीलाओं का गुणगान करने की प्रेरणा दी।

प्रार्थना

हे भगवान तू सर्व व्यापी हैं।
तू प्रत्येक जीवों में सभी स्पंदनों का कारक हैं।
मुझे प्रेरित कर मैं तेरी इच्छा के अनुसार कार्य करूँ
और उन्हें महसूस करूँ।

इस किताब के भक्ति पूर्ण वाचन की आवश्यकता

यदि हम न करें,

हमारे हाथों से पावन अंतरात्मा का पूजन,
हमारे मुँह से उनकी कीर्ति का गायन
हमारे ह्रदय में सहानुभूति और सत्य की अनुभूति

ऐसा एक मानव जनम करता है माता की कोख को बहुत लज्जित

-भागवतम्

यहाँ दिव्य की कीर्ति यानी विश्वरूप दिव्य की चमत्कारिक लीलाएँ, सद्गुरु की स्थिति ब्रह्मा, विष्णु और महेश से भी उच्च हैं। श्री वेंकय्या स्वामी सद्गुरु के रूप में विश्वव्यापी दिव्य का ऐसा ही एक संपूर्ण विश्व रूप है। अपने इष्ट मित्रों के साथ उनकी पावन लीलाओं का अमृत पान करने के लिए सिर्फ़ एक ही मार्ग, अपने मानव जनम के उद्देश्यों को पूर्ण करना है। नहीं तो ऊपर कहे अनुसार हमारा जन्म पृथ्वी पर व्यर्थ अस्थायी निवास है।

संत सुका ने राजा परीक्षित को भागवतम् (महान संतों के जीवन वृत्त) का ज्ञान दिया और उसको उन्होंने एक सप्ताह के भीतर सद्गति दी। महान संतों के जीवन वृत्तों को सुनने के बाद ही शिरडी साई और भगवान श्री वेंकय्या स्वामी ने अपना शरीर त्याग दिया था। अतः इसी कलियुग में भगवान श्री वेंकय्या स्वामी जैसे महान संतों की दिव्य लीलाओं के बारे में चिंतन करना ही मोक्ष प्राप्त करने या दैनंदिन की समस्याओं को सुलझाने का एक मात्र मार्ग है।

गुंटूर के एस. रमेश बाबु के माध्यम से स्वामी जी द्वारा आयोजित पारायण यज्ञ पक्का साक्ष्य यह दर्शाता है कि स्वामी जी के जीवन वृत्तांतों के भक्ति पूर्ण वाचन से हमारे गत कुकर्म धुल जाते हैं और कर्क रोग जैसे असाध्य रोग से भी स्वस्थ हो सकते हैं। प्रह्लाद द्वारा बताए अनुसार हमारे जनम के उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए, चलिए हम स्वामी जी की दिव्य लीलाओं का अमृत पान करें।

श्री स्वामी जी के कृपा पात्र भक्तों के पते इस किताब में दिए हैं। सत ह्रदयी लोग वैयक्तिक पूछताछ कर उनके अनुभवों की सत्यता परख सकते हैं। बिना वैयक्तिक संपर्क और जाँच के यदि आप कहे कि यह सभी काल्पनिक कथा - साहित्य हैं तो आप **अन्यों** के ह्रदयों में संदेह के बीज बोएँगे और उनके विश्वास को तोड़ देंगे। इस तरह की नीरस बातें घृणित है और ये पावन भक्ति जल को विषैला करने वाली होती हैं।

श्री स्वामी जी का जीवन

भगवान श्री वेंकय्या स्वामी जी का जन्म आँध्र प्रदेश के नेल्लूर ज़िले में नागुलवेल्लटूर नामक गाँव के सोमपल्लि पिच्चम्मा और पेंचलय्या नामक धर्मपरायण दंपति के घर हुआ था। उनकी दिव्य लीलाओं की उनके बचपन से ही पुष्टि होती हैं कि वे ग़रीबों और अज्ञानी लोगों का दुख दूर करने संपूर्ण विश्व रूप दिव्य मानव रूप में प्रकट हुए हैं।

एक बार उन्होंने कहा कि पिच्चम्मा और पेंचलय्या ने उन्हें जन्म अन्य सभी मानवों की तरह नहीं दिया था। अन्य शब्दों में इस धरती पर उनका जनम दिव्य उद्देश्य से हुआ हैं। इसकी पुष्टि श्री स्वामी जी के नीचे दिए कथनों से होती हैं। उनकी अस्सी की उम्र में उनके पैर को लक़वा मारा था और वे चल नहीं पा रहे थे। भक्तों ने उन्हें इलाज कराने की बिनती की। उन्होंने यह कहते हुए इन्कार किया था कि " उपचार किया तो इस दर्द का अनुभव लेने उन्हें दूसरा जन्म लेना होगा।" एक बार उन्होंने कहा था " वे सागर के उस पार भी देख सकते हैं। उनकी दृष्टि को कोई रुकावट नहीं हैं। वैसे ही मेरे लिए आध्यात्मिक गुरु की क्या आवश्यकता हैं ?" बचपन से ही उन्हें रहस्यमय शक्तियाँ प्राप्त थीं। लेकिन अज्ञानी लोगों को उसकी पहचान नहीं थी। एक बार उनके भतीजे को बहुत ही तेज बुखार था। उनकी बहन मंगम्मा ने बच्चे की बचने की आशा छोड़ दी थी और वह रोने लगी थी। दयालु श्री स्वामी जी ने बच्चे के चेहरे पर से हाथ घुमाया और कहा "उसे बच्चे की चिंता करने की अब ज़रूरत नहीं हैं।" यकायक बच्चा बिना दवा के स्वस्थ हो गया। उस वक्त श्री स्वामी जी सिर्फ़ सोलह वर्ष के थे। एक बार श्री स्वामी जी उनके बहन को उनके जन्म गाँव को ले आने के लिए उनके बहन के गाँव राजपद्मापुरम आए थे। लेकिन उनके बहन को चिंता थी कि यह पागल लड़का उन्हें रास्ते पर ही छोड़ देगा। एक बार सर्वज्ञ श्री स्वामी जी ने उनकी बहन के अनुच्चारित विचारों को बताया "दीदी !

मैं इतना पागल हूँ कि तुम्हें रास्ते में ही छोड़ दूँगा। ये सब यह दर्शाता है कि उन्हें उनके बचपन से ही इन महान दैवी शक्तियों का वरदान था।

उनके बचपन से ही वे धर्म परायण आचरण के लिए बहुत ही प्रसिद्ध थे। वे उनके बाल मित्रों के सभी झगड़ों को सुलझाने के लिए बिना ताज के बादशाह थे। ग्रीष्मकाल के दौरान जब उन्होंने, गाय-बैलों को कूड़ा - करकट खाते हुए देखा, तब उनका दिल पसीजा था। उन्होंने उनके सिर पर का घास का गट्ठा गाय-बैलों को खिलाया और ख़ाली हाथ घर लौटे थे। इस तरह के दयालु आचरण के कारण लोग उन्हें पागल वेंकय्या कहते थे।

बीस वर्ष की उम्र में कुछ दिन उन्हें बहुत तेज बुखार हो गया था। कुछ दिन बाद मति भ्रमित व्यक्ति या पागल जैसे बर्ताव करने लगे थे। वे दिन-रात गली में "चाकलि योगम" (धोबी योग) मंगल योगम (बारबर (नाई) योग) और जक्कल योगम !" डुब्डुक डुब्डुक " करके चिल्लाते थे। उन दिनों लोग जाति प्रथा का सख़्ती से पालन करते थे। वे धोबी, हजाम, और हरिजनों (अछूतों) के साथ खाना खाते थे इसलिए उन्हें समाज के बाहर कर दिया था। वहाँ आस-पास कोई एलोपैथिक अस्पताल नहीं था। उनके माता-पिता ने सभी तरह का नीम हकीम उपचार और तांत्रिक उपचार कराने का प्रयास किया पर सभी बेकार गया था। इन सभी उपचारों से परेशान होकर उनके माता-पिता ने उन्हें कुछ समय के लिए ऐसा ही छोड़ दिया था। वे गाँव के चारों ओर एकांत स्थानों पर घुमा करते थे। वे युवा लड़कियों को देखकर भाग जाते थे ; जैसे कोई लड़का बाघ देखने पर भाग जाता है।वे कई दिनों तक घर नहीं लौटे थे। उनकी माता जी खाद्य पदार्थों के पैकेट लेकर उन्हें खोजने के लिए कुलियों को भेजा करती थीं। यदि खाद्य पदार्थों के पैकेट देख लिया तो वे पीछे-पीछे चलकर घर आ जाते थे। वे शान से खाते थे और उनकी माता जी द्वारा तैयार रखे नए कपड़े पहन कर फिर जंगल में भाग जाते थे।

एक बार उन्होंने गाँव छोड़ दिया था और कई वर्षों तक दिखाई नहीं दिए थे। उनके माता-पिता ने उनकी बहुत खोज की थी और उनका लड़का वापस आने की आशा ही छोड़ दी थी। आख़िर कुछ वर्षों के बाद पड़ोस के गाँव में दिखे। लेकिन तब तक पागल वेंकय्या के बजाय वे वेंकय्या स्वामी के नाम से जाने जाते थे। उस वक्त वे मनुष्यों के ही नहीं तो पशुओं के भी असाध्य रोगों को ठीक करते थे। उन्होंने लोगों को भावी विपत्तियों से सचेत किया और उसका निवारण कर उससे बचाया था। वे उनकी कृपा दृष्टि के रूप में गले में बाँधने के लिए सफ़ेद धागे का एक टुकड़ा दिया करते थे। उनके दर्शन के लिए आने वाले भक्तों के बारे में कुछ गूढ़ संदेशों का उच्चारण किया करते थे। गूढ़ बातों को उन्हें काग़ज़ पर लिख कर दिया जाता था। वे उनकी कृपा के रूप में काग़ज़ को स्पर्श करते थे और उसे भक्तों को दिया जाता था। वे काग़ज़ पर उनके अँगूठे की छाप लगाते थे और उसे श्री स्वामी जी की कृपा चिह्न के रूप में भक्तों को दिया जाता था ।

वे अपने पास हमेशा आग रखा करते थे। वे जहाँ भी जाते उनके हाथ में पुरानी रस्सी का एक छोर रहता था जिसका दूसरा छोर जलता रहता था। वे हमेशा सिर पर रस्सियों के टुकड़ों का गट्ठा, हाथ में मिट्टी का छोटा मटका और दूसरे हाथ में एक डंडा लिए देखे जाते थे। वे कई वर्षों तक राजुपालेम के पास पेन्नार नदी के किनारे और सोमसिला जंगल में घूमते रहते थे। वे खाना खाने के बाद ही बिना विलंब के, घर छोड़ दिया करते थे। वे हमेशा ओंजली से पानी पीते थे। वे पानी पीने के लिए बरतन या गिलास कभी भी उपयोग नहीं करते थे। उन दिनों हैज़ा (कॉलरा) और चेचक (छोटी देवी की बीमारी(स्माल पॉक्स)) से कई गाँव ख़ाली हो गए थे। ऐसी असाध्य स्थिति में उनका धागा, धूप और आशीर्वाद विपत्ति में संरक्षक था। प्रारंभ में राजुपालेम के पास में पहाड़ी पर झोंपड़ी में रहते थे उसे अंकालम्मबोटु कहते थे। वे हमेशा रात भर तेल का दिया जलता रखते थे और इकतारा* बजाते थे।

*इकतारा - एक तंतु वाद्य उपकरण

उसके बाद उन्होंने अपना स्थान कोटितीर्थम के शिवालयम में स्थानांतर किया था। वहाँ वे " ओम नारायण आदि नारायण " महा मंत्र गाया करते थे तथा सारी रात दोनों हाथों से दो इकतारे बजाया करते थे। यदि उन्हें बहुत ही नींद आ जाए तो वे दाँतों के मसूड़ों को काँटे से ख़ून निकलने तक चुभाया करते थे और फिर मुँह के ख़ून को पानी से धोते थे। वे मंत्र जप में इतने तल्लीन हो जाते थे कि उनके इकतारे की तार टूटने का भी उन्हें ध्यान नहीं रहता था ।

वे कई वर्षों तक सोमसिला के पास पेन्नार नदी पर बालू का बाँध बाँधने के कार्य में दिन-रात व्यस्त थे। यह भगवान का कार्य होने के कारण उन्होंने भक्तों से भी बाँध बनाने के कार्य में मदद करने को कहा था। कोई एक या अन्य रोज़ स्वामी जी तथा उनके सभी भक्तों के लिए भोजन का प्रबंध किया करते थे। उन दिनों पानी तथा गीली बालू में सतत काम करने के कारण उनके पाँव और हाथों को चोटें आई थीं। उन्होंने नहर बना कर उस में नदी के प्रवाह के विपरीत दिशा में पानी प्रवाहित किया जो मानवों के लिए असंभव था। जहाँ नहर और नदी के पानी का संगम था वहाँ सूखी टहनियों का प्रयोग कर पानी पर वे आग जलाते थे। वे आग के एक ओर पानी उँडेलते थे। वे कहा करते थे कि यह सब वे हैज़ा, चेचक और ऐसी ही भयंकर बीमारियों से लोगों को बचाने के लिए करते थे। वे यह भी कहते थे कि एक तुला[1] पानी की क़ीमत तीन करोड़ थी। संपूर्ण विश्व के दिनों के व्यय के बाद उस दिन तक कार्य दस करोड़ के आय के सम तुल्य था।

वे कुछ वर्षों के बाद ग़रीब और पददलितों की सेवा करने के उद्देश्य से यात्रा किया करते थे। वे किसी के भी घर कभी नहीं ठहरते थे। वे हमेशा उजाड़ मंदिर, गाँव की चावड़ी, पेड़ की छाया और वीरान घर में ही रहते थे।

1. तुला - अंग्रेज़ों के राज के दौरान एक रुपए का भार

वे उनका खाना बहुत ही दुर्लभ और विशिष्ट ढंग से लेते थे। एक बड़ी पत्तों की पत्तल में पात्र उलटा कर पात्र भर खाना ख़ाली किया करते थे। वे पत्ते की पत्तल के चारों ओर उनकी उँगलियों से भात फेंका करते थे। उन्हें फिर दूसरी बार खाना परोसा जाता था। वे उनकी दोनों हथेली से पहले उनके सिर को स्पर्श कर उसके बाद ही खाने को स्पर्श करते थे और घर के लोगों को प्रसाद के रूप में खाना देते थे। तीसरे पात्र भर खाना उन्हें परोसा जाता था। खाने के ढेर के बीच से ही बहुत ही थोड़ा खाया करते थे और बाक़ी खाना पत्ते की पत्तल के चारों ओर फेंकते थे। उन्होंने स्वाद की परवाह नहीं की। सूखी मिर्च की चटनी उनकी मन पसंद थी। जब वे भ्रमण किया करते थे तब कुओं और नदियों में नहाया करते थे। स्वामी जी ने जिन गंदे कुओं और तालाबों में डुबकी लगाई वे शुद्ध हो गए थे। जिन सूखे कुओं में स्वामी जी ने थोड़ा पानी डाला वहाँ हमेशा के लिए पानी ही पानी भर गया था। वे बुढ़ापे में बहुत ही गरम पानी से नहाते थे। स्वामी जी गोलगमूडि के समाधि मंदिर के पास कोनेरु में नहाते थे। उनके पावन शरीर के स्पर्श से कोनेरु पवित्र हुआ है। इसलिए यहाँ पानी बहुत बहुत पवित्र है। समाधि मंदिर का कुआँ खोदने के कार्य का उद्घाटन स्वामी जी के हाथों से मिट्टी खुदवाकर कुछ टोकरी मिट्टी उठवाकर किया था। संपूर्ण गाँव तथा तीर्थ यात्रियों के लिए यह एक ही कुआँ है जो भयंकर सूखे के समय में भी हमेशा पानी से भरा रहता है।

उनके भ्रमण के दौरान गोलगमूडि में एक बार सतत आठ वर्ष रहे थे। पवित्र धुनी या आग दिन-रात जलती रहती थी । गोलगमूडि के आसपास के जंगल की जलावन लकड़ी समाप्त हुई थी। कुछ समय के लिए उन्होंने धुनी और अँगूठा चिह्न दोनों जारी रखे थे। इसके लिए भक्तों ने समाचार पत्रों की रद्दी, सफ़ेद काग़ज़ और स्याही की गोलियाँ दी थीं। उन्होंने भक्तों को अँगूठे की छाप सँभाल कर रखने के लिए सचेत किया था ; जैसा कि

उसका मूल्य भविष्य में लाखों का होने वाला हो। आज श्री स्वामी जी का प्रत्येक शब्द सच हुआ है। विश्व की भावी प्रवृत्तियों के बारे में उनका संदेश ही नहीं तो भक्तों ने जो काग़ज़ पर लिखा था वह भी। उदाहरण के तौर पर उन्होंने लिखा था "हम बिना करछुल के प्रयोग से पकाया खाना खाएँगे।" आज वह सत्य हो गया है, जैसा कि अब हम प्रेशर कूकर में खाना पकाते हैं।

एक बार आश्रम परिसर दिखाते हुए उन्होंने कहा था कि गत चौदह पीढ़ियों के लिए सुवासित खाद्यान्न के बड़े ढेर थे। इस संबंध में सुगंधित खाद्य के ढेर का तात्पर्य उनकी सदा बहार तपस्या के रूप में लिया जा सकता हैं। कई सौ वर्षों की संतों की तपस्या से यह स्थान पवित्र और समृद्ध हुआ है। इस शक्ति के परिणाम स्वरूप इस स्थान पर रहना प्रारंभ करने से ही असाध्य रोग भी ठीक हो जाते हैं। सभी पिछड़ा क्षेत्र जहाँ से श्री स्वामी जी उनका खाना प्राप्त करते थे, वह क्षेत्र जल सिंचन सुविधा के कारण आज बहुत विकसित हुआ है।

आज सोमसिला बाँध वहीं बनाया गया है जहाँ श्री स्वामी जी बालु का बाँध बनाया करते थे। इस बाँध का पानी सोमसिला से क़रीब एक सौ किलोमीटर दूर स्थित समाधि मंदिर गोलगमूडि तक बहता है। उन्होंने सूखे के दौरान कितनी बार बरसात कराई, उसे कोई नहीं बता सकता। उन्होंने कुष्ठ रोगियों की सेवा की और उनकी मदद की। उनकी कृपा से कई लोगों ने पीने का व्यसन छोड़ दिया। चले, उनके कुछ शानदार चमत्कार देखें।

मृत्यु पर विजय

दिनांक 24-8-1982 को श्री स्वामी जी ने महा समाधि ली। लेकिन दिनांक 16-9-86 को वे मेरे दोस्त के घर विजयनगरम गए और खाना माँगा था। वे शिरडी साई के अनन्य भक्त थे। तब श्री स्वामी जी के सफ़ेद बाल थे और वे घुटनों तक धोती पहने थे और

उनके कंधे पर सफ़ेद टॉवेल था। उनके हाथ में छड़ी थी। उस वक्त मेरे मित्र श्री स्वामी जी के बारे में कुछ नहीं जानते थे। उनकी माता जी ने श्री स्वामी जी को पत्तों की पत्तल में खाना दिया था। श्री स्वामी जी ने खाना गाय को खिलाया। उन्होंने एक गिलास रसम पिया और कहा "उनकी भूख तृप्त हुई" और चले गए। उनकी उपस्थिति में माता ने एक परमानंद का अनुभव किया। माता ने उनके घर कौन आए थे उसके बारे में अपने पुत्र को बताया। जैसे ही आगंतुक ने गाय को खाना खिलाया उन्होंने दर्शाया कि वे शिरडी साई की प्रतिमूर्ति थे। संपूर्ण गाँव में उनके लिए छानबीन की पर कोई लाभ नहीं हुआ। श्री आचार्य भरद्वाज द्वारा लिखित "अवधूत लीला"नामक पुस्तक एक सप्ताह में ही सद्भाग्य से उनके घर पहुँची।

श्री स्वामी जी का छायाचित्र किताब में देखने पर मेरे मित्र की माँ ने निःसंदेह पहचान लिया था कि ये वे ही व्यक्ति हैं जिन्होंने उस दिन भोजन गौ-माता को खिला दिया था। श्री स्वामी जी के दिखने संबंधित विवरण और संभाषणों से उनके कथन की पुष्टि होती है। मेरे मित्र ने श्री स्वामी जी की प्रार्थना की कि वे फिर से उनके घर आकर उन्हें आशीर्वाद दें।

पुनः दिनांक 12-10-1986 को दिन के 12 बजे मुख्य द्वार पर ज़मीन पर बैठे हुए थे। मेरे मित्र को उनके आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था। एकाएक उसने श्री स्वामी जी को वंदन किया और घर में आने की बिनती की। लेकिन श्री स्वामी जी ने स्पष्ट नकार दिया। श्री स्वामी जी ने उन्हें दी गई मिठाई वहाँ उपस्थित सभी लोगों को बाँट दी। उन्होंने कद्दू की सब्ज़ी खाई, खीर पी और चले गए। उस दिन के बाद विजयनगरम से कई लोग गोलगमूडि की श्री स्वामी जी की समाधि के दर्शन के लिए आने लगे।

पुनः मेरे मित्र ने तीसरी बार दर्शन के लिए श्री स्वामी जी की प्रार्थना प्रारंभ की और उनके लिए नई चादर तैयार रखी। दिनांक 12-12-1986 को दयालु श्री स्वामी जी ने तीसरी बार उसके घर गए। उनके सभी पड़ोसियों की उपस्थिति में श्री स्वामी जी ने चादर

ली, दूध पिया और चले गए। इस तरह श्री स्वामी जी ने ईसा मसीह जैसे ही समय और मृत्यु को जीत लिया हैं। कहा जाता है कि ऐसे महान संत ने उनका भौतिक शरीर त्यागने के लिए महा समाधि ली।

इसी तरह माह मई 1985 में समाधि मंदिर में तीन महिलाओं के सामने श्री स्वामी जी दस मिनट के लिए प्रकट हुए और अंतर्धान हो गए। ऐसी कई घटनाएँ हुई हैं कि दिन में भी कायिक रूप में श्री स्वामी जी ने दर्शन दिए हैं।

जब तक सूरज और चंद्रमा हैं तब तक उन्होंने धरती पर रहने का वचन दिया है।

महा समाधि के पहले के अनुभव

जे. सी. पेंचलय्या - येर्रपल्ली - नागुलवेल्लटुर (श्री स्वामी जी का जन्म स्थान)

मेरे भाई जे. पेद्द पेंचलय्या, आयु 24 वर्ष, एक प्रायमरी पाठशाला अध्यापक थे। अंगघात से उनके पाँव, हाथ और आवाज़ भी प्रभावित हुए थे। वे उनकी दैनिक क्रियाएँ भी बिस्तर पर ही किया करते थे। मशहूर लक़वा विशेषज्ञ भी उनकी आवाज़ वापस नहीं ला सके थे। इन सभी उपचारों से परेशान होकर मेरी माँ ने उसे ठीक करने के लिए दयालु श्री स्वामी जी से प्रार्थना की। श्री स्वामी जी ने कहाँ, " माता बिल्लुपाडु मिट्टलु पर एक यूलिण्द्र पेड़ के नीचे एक आम की गुठली है। आपके पुत्र को आम के बीज का चूर्ण दो और वह ठीक हो जाएगा।" माँ ने मुझे बिल्लुपाडु मिट्टलु से आम की गुठली लाने को कहा था तब मैं उस अज्ञानी और पागल स्वामी की बकवास पर हँस रहा था। ऐसे घने जंगल में बीज की खोज करना कोई मज़ाक नहीं था। इसलिए हम उस घटना को भी भूल गए थे।

दो माह के बाद उपचार के लिए हम मेरे भाई को झूले में बिल्लुपाडु के पास बालाजीपेट ले जा रहे थे। वह एक बहुत ही गरम दिन था। हम बिल्लुपाडु के पास एक पेड़ के नीचे विश्राम करने के लिए रुके थे। मेरे पिता जी जो पेशाब के लिए गए थे। उन्हें

यूलिण्द्र पेड़ के नीचे आम की गुठली मिली। अचानक दो माह पहले श्री स्वामी जी द्वारा दिया उपदेश मेरे पिता जी को याद आया। उन्होंने गुठली ली और बालाजीपेट जाने के मेरे अनुरोध के बाद भी पिता जी हमें हमारे गाँव वापस ले आए। हमने श्री स्वामी जी के बताए अनुसार मेरे भाई को आम की गुठली का चूर्ण खिलाया। अगली सुबह मेरे भाई को चलते और श्री स्वामी जी की बड़े उत्साह के साथ प्रार्थना करते हुए देखकर मैं मंत्र मुग्ध हो गया था।

शैक्षणिक और वैज्ञानिक ज्ञान के कारण मुझे जो अहम् हो गया था उसे इस घटना ने दूर किया। मैंने श्री स्वामी जी को साष्टांग दंडवत किया और मेरी गत असंगत बकवास के लिए संपूर्ण दिल से प्रायश्चित किया।

वर्ष 1953 में बोइंड्ला नरसम्मा बहुत धनी थी कि उनके घर को नरसम्मा संस्थान कहते थे। उनके पुत्र कोन्डा रेड्डी जिसकी आयु क़रीब 60 वर्ष थी जिन्हें तीन पुत्रियाँ थी लेकिन कोई पुत्र नहीं था। दुर्भाग्य से एक वर्ष के भीतर ही उसकी सभी संपत्ति कपूर की तरह उड़ गई और वह कंगाल बन गई। उसकी सभी गाय-बैल, भेड़ें और बकरियाँ मर गईं। अनाज भी नहीं हुआ था। उनके अचानक और अनपेक्षित किस्मत के कारण वे मानसिक रूप से अस्थिर थी। एक दिन वृद्ध दंपति ने भिक्षा के लिए श्री स्वामी जी को आमंत्रित किया। श्री स्वामी जी उनके द्वार पर रुके और बोले , " हो ! शैतानी आग से मैं भी जल रहा हूँ फिर आप कैसे जीवित रह पाए? हो ! मैं यहाँ खाना खाऊ तो मुझे बहुत भुगतना पड़ेगा और बहुत ही यातनाएँ सहनी होगी। नहीं नहीं हम यहाँ खाना नहीं खा सकते।" मैं (जे. सी. पेंचलय्या) श्री स्वामी जी से बिनती की " स्वामी जी यदि आप उन्हें बचा नहीं पाएँगे तो इस धरती पर उनका संरक्षण कौन कर सकता हैं? हे दयालु भगवान ! उनका खाना स्वीकार कीजिए और उनके दुर्भाग्य से उन्हें बचाइएँ। " दयालु श्री स्वामी जी मान गए और उनके परिसर में प्रवेश किया।

श्री स्वामी जी ने पत्ते की पत्तल में भोजन लिया और दोपहर से अँधेरा होने तक घर के चारों ओर प्रदक्षिणा प्रारंभ की थी। उन्होंने शाम होने पर घर के प्रत्येक कोने में भोजन के कुछ कोर फेंके। उनकी आँखें आग उगल रही थी और उन्होंने शेर की तरह गर्जन करते हुए कहा " जा ! दूर जा !" सभी प्रत्यक्षदर्शी डर से काँपने लगे थे। घर के अहाते के उत्तरी - पूर्वी कोने में गोबर के गड्ढे से यकायक आग की ज्वाला भड़क उठी थी। ज्वाला हवा में नाचते हुए घूमी और नष्ट हो गई। सभी गाँववासी चिल्लाए कि आग की ज्वाला से उनके घर जल सकते हैं। लेकिन वैसा नहीं हुआ। हाफते हुए श्री स्वामी जी ज़मीन पर गिर पड़े। कुछ समय के बाद श्री स्वामी जी को होश आया। उन्होंने कहा "इसके बाद आपको कुछ नहीं होगा। ब्रह्म राक्षसी की चुटियाँ मेरे हाथ में हैं। डरने की कोई बात नहीं है। अब वह इस क्षेत्र में कभी नहीं आएगी। आपके पेट में मूँछ उग आएगी (यानी आपको पुत्र होगा) और आप समृद्ध हो जाओगी।"

साठ वर्ष की आयु में बूढ़ी महिला गर्भवती हुई और एक वर्ष के भीतर एक पुत्र को जन्म दिया। उसके बाद वे धनवान और समृद्ध बने। वे कितने भाग्यवान होंगे जिन्होंने श्री स्वामी जी का ऐसा चमत्कार अपनी आँखों से देखा और ऐसे महान संत के मेज़बान बने। उन ग्रामवासियों के दिल में आज भी श्री स्वामी जी का नाम लेते ही जादू सा प्रभाव होता है।

सूखे के दिनों में मूक प्राणियों के बिना चारे और जल के कारण होने वाली दुर्दशा देखी नहीं जाती थी। दयालु श्री स्वामी जी का दिल मक्खन की तरह पसीजता था।

बहुत ही झुलसता ग्रीष्म था। लंबे समय तक बरसात नहीं हुई थी। गाय - बैल, भैंस, भेड़ - बकरियाँ सभी जल और चारे के बिना मर रहे थे। नींबू के पेड़ों को बचाने के लिए गहरे कुओं से पानी निकालने के लिए जोते जानेवाले बैलों का दुख हम व्यक्त कर नहीं सकते। ऐसी ही एक झुलसती दोपहर के समय श्री स्वामी जी एक पेड़ के नीचे उनकी धुनी लगाए बैठे थे। नींबू के बग़ीचे की सिंचाई कर चल्ला शंकर रेड्डी अपने बैलों के साथ घर लौट रहा था।

रेड्डी ने श्री स्वामी जी से निवेदन किया, "स्वामी जी ! इन गूँगे जानवरों की किस्मत देखें। ये कुछ दिनों तक बिना चारे और पानी के रह सकते हैं?" ख़ाली पेट और पसीना-पसीना हुए बैलों को देखने पर श्री स्वामी जी का हृदय पसीज गया था। उन्होंने ऊपर देखा और कहा " कुछ ही देर के लिए" और अपने कार्य में तल्लीन हो गए। बहुत ही आश्चर्य की बात थी। रेड्डी घर जाकर खाना ही खा चुके थे कि बरसात शुरू हुई। कुछ ही घंटों में सभी तालाब भरे थे। शंकर रेड्डी को छोड़ कर कोई नहीं जानता था कि ये बरसात श्री स्वामी जी की कृपा से हुई थी। उनका प्रकृति पर नियंत्रण था।

श्री स्वामी जी चमत्कारिक शक्ति वाले चिकित्सक

गुंडल मल्लय्या तिक्कारपाडु- वेंकटाचलम मंडल - नेल्लूर जिला

उन दिनों आज की तरह श्री स्वामी जी की कीर्ति व्यापक रूप से फैली नहीं थी। ग़रीब तथा गाय-बैलों के बीमार होने पर उन दिनों श्री स्वामी जी का रक्षा सूत्र (धागा) और उनकी धूप बत्ती ही एक मात्र सहारा थी। एक दिन हम आश्रम का जिर्नोध्दार कर रहे थे। हमने टोकरियाँ और रस्सी की सहायता से कुएँ में पत्थर उतारे थे। न जाने पत्थर टोकरी से निकल गया और कुएँ में गिरा। उससे एक व्यक्ति के कंधे पर, दूसरे के कमर पर और तीसरे के पाँव पर चोंटें लगीं। पैर में 12 इंच लंबा और आधा इंच गहरा चिर दिया था। उसके पाँव से अत्यधिक ख़ून बह रहा था। "मर गया !मर गया !मर गया !" कुएँ से आवाज़ सुनाई दे रही थी। कैसा भी करके जख्मी व्यक्तियों को कुएँ के बाहर निकाला था। श्री स्वामी जी उनके पास दौड़ कर गए और उसकी ज़ख़्म को स्पर्श किया। आकाश की ओर देखते हुए कुछ सीटी बजाने जैसी आवाज़ निकली और कहा "अय्या" इससे आपको कोई हानि नहीं होगी। यहाँ ही रुके घर न जाए और काम करते रहें।" यह कल्पना के परे था की शाम तक तीन चौथाई ज़ख़्म ठीक हो गई थी। तीसरे दिन तक ज़ख़्म का निशान बिल्कुल भी नहीं दिख रहा था। तथापि हमने कोई भी दवा नहीं लगाई थी। ऐसी उन्हें असामान्य शक्ति थी।

महा समाधि के बाद

श्री स्वामी जी की महा समाधि के बाद के भक्तों के अनुभव भौतिकवादियों, नास्तिकों और आस्थाविहीन लोगों के आँखें खोलने वाले हैं। यह आस्थावानों के लिए चेतावनी हो सकती है ताकि वे निर्भीक होकर साधना पथ पर चल सकें।

यहाँ कहा जाता हैं कि सद्गुरु की कृपा से लँगड़े व्यक्ति पहाड़ पर चढ़ सकते है और गूँगे भगवान गुणगान कर सकते हैं लेकिन सद्गुरु श्री वेंकय्या स्वामी जी ने अपनी कृपा से अंधे को दृष्टि देकर उन से ज़्यादा कर दिखाया हैं।

विजयलक्षमी टाँकिस स्टौनहोसपेट नेल्लूर के उत्तर में तीस मकानों के बाद कुडुमुल जयम्मा का मकान है। वह अपनी चार लड़कियों और इकलौते पुत्र की परवरिश के लिए द्वार - द्वार फल बेचने वाली है। उसके तीन माह का बेटा पेचिस से परेशान था। तीन माह तक अलोपैथिक उपचार करने के बाद भी वह छोटा सा लड़का हमेशा आँख बंद कर बिछाने पर पड़ा रहता था। उसने सोचा कि पेचिस से कमज़ोरी के कारण लड़का आँख मुँदकर रह रहा है। उस लड़के की हड्डियाँ दिख रही थी तथा उसके शरीर की दुर्गंध आती थी। एक दिन जब उसकी माँ चेहरे को पाउडर लगा रही थी तब छोटे बच्चे की बाएँ आँख से पतला कार्नियाक द्रव का गोला नीचे गिरा था।

नेत्र विशेषज्ञ ने आँखों की जाँच की और कहा विषाणु (वैरस) संक्रमण के कारण दोनों आँखें पूर्णतः क्षति ग्रस्त हो गई थी। दोनों आँखों की पुतलियाँ काले भाग के बिना पूर्णतः सफ़ेद हो गई थी। इसके अलाँवा दोनों आँखों में रंग द्रव्य का छोटा सफ़ेद पिंडक था। आख़िरी कार्नियाक द्रव का बूँद भी गिर गया था। उन्होंने यह भी कहा था कि बच्चे को मद्रास ले जाना श्रम की हानि ही होगी। दुखी माता डॉक्टर से चौथे दिन पुनः मिली और डॉक्टर से बिनती की कि आँख की पुनः जाँच करें। डॉक्टर ने बच्चे की माँ को उसकी

लापरवाही के लिए भलाबुरा कहा और उसे वापस भेज दिया।

उनके पड़ोसी पब्बु शेषय्या की सलाह पर उसने अपने बच्चे को गोलगमूडि लाई। उसने श्री स्वामी जी से सच्ची प्रार्थना करते हुए कहा कि "वह पच्चीस रुपये का कपूर चढ़ाएगी। क्या चमत्कार ! अगली शनिवार तक बच्चे के दोनों आँखों को पुनः दृष्टि आ गई। पेचिश जिससे गत दो माह से बच्चा ग्रस्त था वह पूर्णतः ठीक हुआ। इस तरह उसकी चपेट में और एक मामला आया और उसे प्यार और विश्वास का आशीर्वाद मिला। यह भी नोट किया जाता है कि कोई भी दवा लगाए बिना आँखों को पुनः दृष्टि मिली।

इरगा श्री देवम्मा पत्नी / श्री रमनय्या पानी के टंकी के पास, वेंकटेश्वरपुरम, उत्तरी पेन्नार फल, नेल्लूर का कथन नीचे दिए अनुसार है :-

वर्ष 1981 के दिवाली को मेरे इकलौते बेटे इरेन्द्र बाबु की आयु क़रीब तीन वर्ष थी। वह उस दिन ठीक था। दिवाली त्योहार के दिन से उसे पाँच दिन बुखार था। पाँचवें दिन उसके दोनों पैर संवेदना हीन हो गए और वह अपने पैरों को सीधा नहीं कर पाता था। नेल्लूर डॉक्टर ने पक्का बता दिया था की उसे पोलियो हुआ है। इसलिए उसे उपचार के लिए मद्रास भेजा था। चालू उपचार में हज़ारों रुपये ख़र्च हुए पर कोई लाभ नहीं हुआ। शौच के लिए बैठने पर उसके पैर उसके शरीर का भार सँभाल नहीं पाते थे। उस वक्त हमें उसे बग़ल में हाथ से पकड़ कर रखना पड़ता था। मेरे प्यारे बेटे की बीमारी के कारण मेरी भूख और नींद उड़ गई थी। मेरे बेटे की दुर्दशा के वक्त जो मानसिक परेशानी हुई उसे भगवान ही जानते हैं। उस वक्त तक मैंने श्री स्वामी जी के बारे में नहीं सुना था।

मेरे भाई ने मुझे आश्वस्त किया कि भगवान श्री वेंकय्या स्वामी जी सिर्फ़ मेरे बेटे को बचा सकते हैं। मैंने श्री स्वामी जी के फ़ोटो के सामने हाथ जोड़े और बहुत समय तक रोती रही।

जब मेरा मन सहज हुआ तब मैंने श्री स्वामी जी को पुष्पहार और थोड़ा चावल अर्पण करने का संकल्प कर मन से मेरे बेटे के

पैर ठीक करने के लिए श्री स्वामी जी की प्रार्थना की। उसी रात मेरे सपने में एक डॉक्टर आया उसने मेरे बेटे के दोनों पैरों में इंजेक्शन की सुई चुभाई और अपने चिकित्सा औज़ारों के साथ चला गया। बड़ी आश्चर्य की बात यह कि अगली सुबह से मेरा बेटा चलने लगा। मैं उस क्षण का आनंद व्यक्त नहीं कर सकती।

मेरा लड़का चल रहा था परंतु अच्छी तरह चल नहीं रहा था। मैं ने पुनः श्री स्वामी जी की करुण हृदय से प्रार्थना की। एक बार मैंने देखा कि सपने में एक बुड्ढा व्यक्ति मेरे बेटे की पीठ थपथपा रहा है और उसने उसे कहा कि "उसका हाथ पकड़ कर चलो।" सुबह से वह अच्छी तरह चलने लगा। मैंने गोलगमूडि में श्री स्वामी जी की 40 दिन सेवा की और मेरे व्रत के अनुसार उन्हें पुष्पहार और चावल अर्पण किए। मैं ताउम्र श्री स्वामी जी की ऋणी रहूँगी।

आस्था से पर्वत चलते हैं। गुरु या ईश्वर के प्रति ऐसी दृढ़ श्रद्धा केवल पूर्व जन्म के पुण्य कर्मों के फल से ही संभव है। यहाँ पता चलता हैं कि श्री स्वामी जी अपने कार्य सिद्धियों के प्रचार-प्रसार में हमें एक माध्यम के रूप प्रयोग कर रहे हैं।

तेनाली कोदंड रामय्या - बद्वेल डाक घर - मनुबोलु मंडल - नेल्लूर जिला - लिखते हैं कि:-

मैं सन 1986 में हृदयाघात के कारण कोमा में था और सिंधुरा सेवाश्रम नेल्लूर आंध्र प्रदेश में भरती था। मुझे दूसरे दिन होश आया। एक सप्ताह उपचार करने के बाद, मामला गंभीर होने के कारण डॉक्टर ने मुझे शस्त्रक्रिया के लिए मद्रास भेज दिया। मद्रास जाते वक्त मेरे भाई मुझे गोलगमूडि ले गए और हम समाधि मंदिर में एक रात ठहरे थे। दूसरे दिन मुझे विजय नर्सिंग होम, मद्रास में भरती किया था। जाँच के बाद डॉ. गणेश ने कहा था "ओपन हार्ट सर्जरी किए बिना बचने की कोई आशा नहीं है।" इसलिए उन्होंने हमें तुरंत अस्सी हज़ार रुपये जमा करने के लिए कहा था। मैंने ऑपरेशन के लिए साफ़ मना किया था और दवा से ही इलाज करने के लिए डॉक्टर से बिनती की थी। उन्होंने 12 दिनों तक दवा से इलाज

करने का प्रयास किया और उसे दवाख़ाने से छुट्टी दे दी। उन्होंने कहा हृदय के दो वॉल्व पूर्णतः क्षति ग्रस्त हुए हैं और इन्हें बदलना ज़रूरी हैं। किसी भी समय तीव्र हृदयाघात हो सकता है। आपको डॉक्टर की गहन निगरानी में रहना चाहिए इसलिए इमरजन्सी इंजेक्शन दिया। आप प्रसाधन संपन्न कमरे में पूर्णतः आराम लेना चाहिए। आपको कुछ कदम भी नहीं चलना चाहिए।

मैं घर आया और श्री स्वामी जी की समाधि के हफ़्ते में एक बार नियमित दर्शन लेना प्रारंभ किया। मैंने मेरी सभी चिंताएँ श्री स्वामी जी पर छोड़ दी थी। गोलगमूडि में श्री स्वामी जी के दर्शन के लिए हर हफ़्ते 10 किलो मीटर चलकर जाना प्रारंभ किया था। बहुत ही चमत्कारिक बात यह थी कि मेरे 10 किलो मीटर चलने पर भी कभी भी किसी भी प्रकार की दिल की बीमारी की शिकायत नहीं हुई।

जब मैं तीन महीने के बाद जाँच के लिए मद्रास गया तब डॉक्टर को संदेह था कि मैं चला करता था और मेरे विचित्र व्यवहार से वे ग़ुस्सा हो गए थे। उन्होंने फिर मुझे दवा लिखकर दी और चेतावनी दी कि पूर्णतः आराम करें।

इस समय तक मैंने अधिक ही ज़ोरदार और नियमित रूप से पैदल चलना और गोलगमूडि में श्री स्वामी जी के दर्शन लेना जारी रखा था। मैं पूर्णतः जानता था कि श्री स्वामी जी की कृपा से ही मुझे किसी भी प्रकार की हृदय रोग की शिकायत नहीं होगी। इसलिए मैंने श्री स्वामी जी के समक्ष व्रत लिया कि मैं इसके बाद कोई भी दवा नहीं लूँगा और श्री स्वामी जी के साप्ताहिक दर्शन के लिए चलना जारी रखूँगा।

दो माह के बाद खोई हुई भैंसों को खोजने मुझे 20 किलो मीटर प्रति दिन सतत चार दिन चलना पड़ा था लेकिन मुझे दिल की कुछ भी शिकायत नहीं थी।

जब मैं दूसरी बार चिकित्सा जाँच के लिए मद्रास गया तो डॉक्टर ने मेरे नब्बे प्रतिशत ठीक होने पर संतोष व्यक्त किया और मुझे वही दवा दी और आराम करने को कहा। जब मैंने डॉक्टर को

बताया कि मैंने इन महीनों में आपकी एक भी गोली नहीं खाई तब डॉक्टर को आश्चर्य हुआ। मेरा बिना दवा और आराम के स्वास्थ्य सुधार डॉक्टर को रहस्यमय लगा। जब श्री स्वामी जी के दर्शनों के लिए की यात्रा की बात सुनी तब डॉक्टर को भी श्री स्वामी जी की परम शक्ति पर विश्वास हुआ।

एक पखवाड़े के बाद श्री स्वामी जी ने मेरे सपने में आकर कहाँ - मुझे प्रचार - प्रसार के लिए एक माध्यम के रूप में प्रयोग कर रहे हैं। मैं अपने अनुभवों के बारे में आस-पास के गाँवों के लोगों को ज़रूर बताऊँ। इसलिए मैंने मेरे अनोखे अनुभवों को छपाकर पैम्फलेट बाँटे हैं। मैंने भी मेरे घर सतत चालीस दिन अखंड नाम जप, भजन और धुनी दिन-रात जारी रखी थी। मुझे कुछ पता नहीं चला कि बिना किसी पूर्व योजना के सभी दिन बड़े पैमाने में भोजन दान कैसे चलता रहा ? सभी आगंतुकों ने सब कुछ कार्यक्रम अपने ख़र्चे पर किए। सब कुछ श्री स्वामी जी की कृपा से उनकी मिशन के रूप में संपन्न हुआ। हम कुछ नहीं लेकिन सिर्फ़ उनके आदेश का पालन कर सकते हैं।

हमारा सद्गुरु के प्रति आकर्षित होना सहीं समय पर पूर्व जन्म के संबंधों के सत् कर्म के फल ही हैं।

मेरे मित्र की पत्नी उसकी प्रसूति के समय से गत सात वर्ष तक रक्तस्राव से परेशान थी। वह बहुत अशक्त और दुखी थी। उन्होंने हर प्रसिद्ध डॉक्टर से जाँच करा कर अपनी किस्मत आज़माई। लेकिन बीमारी का मूल कारण किसी को भी समझ में नहीं आया। हैदराबाद के एक विशेषज्ञ ने बताया था कि वे उपचार ख़र्च का अनुमान लगा नहीं सकते और एक बार उपचार शुरू किया तो उसे लंबे समय तक जारी रखना चाहिए। यदि हम बीच में ही उपचार बंद करेंगे तो सभी उपचार बेकार हो जाएगा। वे दुविधा में थे कि उपचार शुरू करे या न करें।

एक दिन उसके एक मित्र ने भगवान श्री वेंकय्या स्वामी जी के बारे में एक छोटी पुस्तिका दी। किताब रोचक थी इसलिए उसने उसे

बार-बार पढ़ा। श्री स्वामी जी उसके दिल में बोले। उन्होंने कहा " तुम यहाँ हो तो मैं तुमको कैसे स्वस्थ कर सकता हूँ? गोलगमूडि आइए। मैं तुम्हें ठीक करूँगा।" उसने किताब में दिए श्री स्वामी जी के छायाचित्र को दिल से प्रणाम किया और श्री स्वामी जी से बिनती की "श्री स्वामी जी ! मैं सात वर्ष से बीमार हूँ। मैं गोलगमूडि कैसे आ सकती हूँ? यदि आप मुझे इस शाम तक थोड़ा ठीक कर दें तो मैं आपकी ऋणी होकर तुम्हारे दर्शन के लिए गोलगमूडि ज़रूर आऊँगी।" बस शाम तक आश्चर्यों के भी आश्चर्य हुए। रक्त बहना बंद हो गया था। गत सात वर्षों में उन्हें ऐसा लाभ कभी नहीं हुआ था। उसी आनंद में उन्होंने संपूर्ण रात श्री स्वामी जी की प्रार्थना और उनकी महानता के बारे में बातें करने में बिताई। एक सप्ताह के बाद उन्हें पक्का विश्वास हुआ कि यह सभी श्री स्वामी जी की कृपा से ही ठीक हुआ है और गोलगमूडि के श्री स्वामी जी की समाधि मंदिर को 108 बार प्रदक्षिणा की। वह इस तरह ठीक समय पर अपने निर्धारित गुरु से मिली।

तोगुरु वेंकय्या - रेल्वे मेल ड्राइवर राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त बोगोलु - बीट्रगुंटा - नेल्लूर जिला।

मेरा मित्र तीर्थ - यात्रा पर गया और दीर्घावधि तक वापस नहीं आया। मैं गोलगमूडि आया और श्री स्वामी जी की प्रार्थना की कि मेरे मित्र को घर भेज दो। उसी रात मेरे सपने में मेरे मित्र ने बताया कि वह जल्दी वापस लौट रहा है। मेरा मित्र ऋषिकेश में था उसे घर जाने के लिए आग्रह किया और उसी रात वह वापस आया।

कुंभ मेला प्रयाग की यात्रा से वापस लौटने के बाद मैं दिनांक 2-2- 89 को गोलगमूडि आया। उस रात मैंने सपना देखा, जिसमें श्री स्वामी जी ने सीता-राम की मूर्ति की आरती करते वक्त मंदिर में मुझे आरती (जलते कपूर की आरती) दी। आरती में सिक्का डालने के लिए कहा था। जैसे ही मैंने आरती में एक सिक्का डाला एक सिक्के के दो सिक्के हुए। श्री स्वामी जी ने मुझे एक मंत्र दिया और उसका अर्थ भी समझाया। उन्होंने मुझे धुनी के पास सोने का निर्देश दिया। इस तरह दयालु श्री स्वामी जी ने मुझे लक्ष्य और मार्ग बताया

और वे हर मिनट मेरा मार्गदर्शन कर रहे हैं।

एक दिन मैंने श्री स्वामी जी की सुप्रभात कैसट हमारे रामालय पुजारी को सुनने के लिए दी। वे श्री स्वामी जी के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे इसलिए कैसट नहीं सुनी। श्री स्वामी जी ने पुजारी के सपने में जाकर निर्देश दिया कि वे सुबह कैसट सुनने के लिए लगाए।

1991 में मेरी रीढ़ की हड्डी को कुछ हुआ था और मैं मेरा सिर या गर्दन घुमा नहीं पाता था। जब में बिस्तर पर लेटा तब मुझे करवट बदलना असंभव लगता था। हैदराबाद के विशेषज्ञ डॉक्टर ने बताया था कि ऑपरेशन करना पड़ेगा जिसके लिए क़रीब चालीस या पचास हज़ार रुपये ख़र्च होगा। जब रुग्ण चल नहीं सकता ऐसी स्थिति में ही शस्त्रक्रिया की जा सकती है। इसलिए मैं गोलगमूडि आया और श्री स्वामी जी की प्रार्थना की । उस रात श्री स्वामी जी ने सपने में मेरे गर्दनी हड्डी के पास एक छोटा सा छेद किया और मुझे छेद के पास दाब देने को कहा। टूथपेस्ट जैसा कुछ पदार्थ दो बार बाहर निकला। अगली सुबह मैं स्वस्थ हुआ था।

जब हम प्रार्थना करते तब ही श्री स्वामी जी दर्शन देते हैं ऐसा ही नहीं तो जब हम उन्हें याद करना भूल जाते हैं तब भी वे दर्शन देते हैं। हमारे कल्याण के लिए वे दिन-रात हमेशा सचेत रहते हैं। एक बार उन्होंने वचन दिया था "मैं तुम्हारे साथ हमेशा रहूँगा जब तक धागा अटूट है।" श्री स्वामी जी ने यहाँ बताया बंधन धागा क्या है? वे सभी जीवों में विद्यमान हैं।" यानी अन्य जीवों के प्रति हमारे दृढ़ विचार और हमारी व्यवहारिक ऐसी ऐसी समझ ही अटूट बंधन है। ऐसी कई विचित्र घटनाएँ हैं जहाँ श्री स्वामी जी हमारा कल्याण करते हैं। लेकिन जो श्री स्वामी जी द्वारा किए कल्याण को जान पाते हैं। वे ही श्री स्वामी जी के सच्चे भक्त बन जाते हैं।

लक्काकुल कृष्णय्या - भेषज विज्ञानी- कुल्लुरु (डाक घर) कलुवायि मंडल - नेल्लूर जिला आंध्र प्रदेश जिन्होंने अपने पुत्र को अपोलो अस्पताल मद्रास में भरती किया था। वे लिखते हैं:-

मेरा पुत्र श्रीनिवासुलु, आयु पंद्रह, तगड़ा और स्वस्थ था। उसने दिनांक 17-10-87 को 3 बजे घर में चपाती खाई और उसे सिर दर्द और वांती शुरू हुई थी। उसे चक्कर भी आए थे। तुरंत हमने उसे कलुवायि के नर्सिंग होम में भरती किया और सलाइन चढ़ाई इंजेक्शन लगाए लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। दूसरे दिन हमने उसे रामकृष्णा रेड्डी के बाल विशेषज्ञ नेल्लूर नर्सिंग होम में भरती किया। तीन दिन उपचार करने के बाद उन्होंने अपोलो अस्पताल मद्रास में भरती करने की हमें सलाह दी। उसको अपोलो अस्पताल मद्रास में भरती करने के वक्त तक उसे जुलाब भी शुरू हुए थे। स्कैनिंग और एंजिओग्राम जाँच के बाद डॉक्टर ने मुझे पूछा क्या आप तुरंत ऑपरेशन करने के लिए आने वाला बड़ा ख़र्च कर सकते हैं ? मैंने बिनती की कि मैं (एन. जी. ओ) अराजपत्रित हूँ और कुछ सीमा तक ही ख़र्च कर सकता हूँ। मुझसे पूछे बिना ही डॉक्टर ने मेरे पुत्र को अस्पताल से छोड़ दिया और सामान्य अस्पताल को ले जाने की सिफारिस की थी। सामान्य अस्पताल में भरती करने के बाद हम कुछ ही घंटे वहाँ भरती रखा था। मेरे पुत्र को मैंने टैक्सी में नेल्लूर वापास लाया और उसे प्रभाकर नायुडु और राधा अस्पताल नेल्लूर में भरती किया।

ऐसी गंभीर स्थिति में लड़के को लाने पर डॉक्टर ने हमें डाँटा और उपचार के लिए विशाखापट्टनम या हैदराबाद ले जाने को कहा। नेल्लूर में दो दिन भरती रखने के बाद दिनांक 23-10-87 को पुनः उसे अपोलो अस्पताल मद्रास में भरती किया था। दूसरी बार स्कैनिंग एंजीओग्राम जाँच की जिस के लिए दस हज़ार और ख़र्च हुए। पर डॉक्टर बीमारी का सही निदान न कर पाए। डॉक्टर ने कहा कि "मस्तिष्क का ऑपरेशन करना आवश्यक है और इसके लिए तीस से चालीस हज़ार रुपये ख़र्च आएगा।" मैंने डॉक्टर से बिनती की कि बिना ऑपरेशन के दवा से ही इलाज करें यद्यपि उसका ख़र्च सत्तर हज़ार रुपये था। उस वक्त तक उन्हें बीमारी की विशेष जानकारी नहीं थी।

दिनांक 26-10-87 की रात मेरे बेटे के सपने में उसकी दादी

आई और बोली वह ठीक था। वास्तविक उसकी स्थिति बुरी थी। दूसरी रात मेरे सपने में एक वृद्ध आदमी ने कहा कि मेरा पुत्र ठीक था। लेकिन वास्तव में उसके स्वास्थ्य में सुधार नहीं था। दिन-ब-दिन वह अशक्त और अस्वस्थ होते जा रहा था। दूसरी रात मेरे सपने में भगवान श्री वेंकय्या स्वामी जी प्रकट हुए और कहा " लड़का स्वस्थ है उसे अस्पताल में न रखे। उसे तुरंत घर ले जाइए। मैं पेन्ना बद्वेल (यह हमारे गाँव के नज़दीक का स्थान है जहाँ श्री स्वामी जी ने कई वर्षों तक तपस्या की थी) में हूँ, वहाँ लड़के को ले आए।" मेरे सपने में श्री स्वामी जी उसी रूप में आए थे जैसा मैंने उन्हें दस वर्ष पहले दाचूर में देखा था।

अगली सुबह सभी डॉक्टरों ने बैठक की और इस मामले के बारे में विचार विमर्श किया। अद्यतन जाँच कर वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि उसका स्वास्थ्य एकदम स्वस्थ हैं और उसे अस्पताल से छुट्टी दी जाए।उस दिन से लड़का स्वस्थ था। हमने श्री स्वामी जी के निदेश के अनुसार लड़के को पेन्ना बद्वेल ले गए। दिसंबर 87और जनवरी 88 में मद्रास में उसकी चिकित्सा जाँच की। कोई भी बीमारी पाई नहीं गई। उसने एस एस सी पब्लिक परीक्षा, मार्च 89 में उत्तीर्ण की।

इस कठिन समय में मेरा संपूर्ण ध्यान डॉक्टर पर था, लेकिन किसी भगवान या श्री वेंकय्या स्वामी जी पर नहीं क्यों कि मैं व्यवसाय से एक औषध भेषजज्ञ हूँ। लेकिन दयालु श्री स्वामी जी मुझे मदद करने आए और मेरे पुत्र को बचाया। मैंने दस वर्ष पहले दाचूर में उनकी थोड़ी सेवा की थी। यह उसी का ही फल था। श्री स्वामी जी ने कहा था "यदि तुम मुझे छोड़ दोगे पर मैं आपको नहीं छोड़ूँगा।" उनकी महा समाधि के बाद भी उन्होंने जाग्रत रह कर अपना वचन निभाया हैं। इसलिए सभी भाईयों और बहनों से मेरा नम्र निवेदन है कि वे गोलगमूडि में उनकी धुनी और समाधि की पूजा करे। यद्यपि श्री स्वामी जी द्वारा सुलझाने के लिए हमें कोई समस्या न हो। वहीं भगवान की निःस्वार्थ सेवा होगी। श्री स्वामी जी के नाम पर काकाबली (कौओं के लिए घर के बाहर अन्न देना) बहुत सा अन्न दें।

श्री स्वामी जी को सभी जीवों में देखें और तदनुसार संपूर्ण आदर के साथ कार्य करें। इससे हमें हमेशा श्री स्वामी जी का संरक्षण मिलेगा।

श्री स्वामी जी ने हमें बताया कि सत्य और धर्म का पालन करना कभी ना भूले। यदि हमें श्री स्वामी जी की प्रार्थना करनी है तो बीना टाले समय पर करनी चाहिए। यदि हम अपना वचन भूल जाएँगे तो हमें निश्चित ही समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। यहाँ वुडुमुल स्वामि रेड्डी का एक ऐसा उदाहरण हैं।

सन 1987 में मेरा पुत्र वुडुमुल शिवा रेड्डी आयु बाईस वर्ष, को 103^{0} बुखार था और उसे मिरगी का दौरा आया था। उसके मुँह से झाग निकल रहा था। कोई भूख नहीं थीं। उसकी आँखों की पुतलियाँ ऊपर तैर रही थीं। अलोपैथी डॉक्टर से इलाज के लिए हमने छह हज़ार रुपये ख़र्च किए थे पर कोई लाभ नहीं हुआ। मेरे मित्र की सलाह पर आखरी उपाय के रूप में मैं गोलगमूडि आया और श्री स्वामी जी से प्रार्थना की कि अगर मेरा बेटा ठीक होगा तो एक सौ सोलह रुपये चढ़ाऊँगा। वह तीन दिनों में पूर्णतः स्वस्थ हो गया।

मैंने गोलगमूडि आने और मन्नत पूरी करने के लिए तारीख़ निश्चित की थी। लेकिन दुर्भाग्य से मुझे हैदराबाद जाना पड़ा था। मैंने श्री स्वामी जी को दिए वचन से मेरे वैयक्तिक कार्य को अधिक महत्व दिया। उसी दिन से मेरा बेटा फिर बीमार पड़ गया। मैंने अनुमान लगाया कि श्री स्वामी जी को दिया वचन पूर्ण न करने की मेरी लापरवाही का यह परिणाम था। मैं तुरंत अपने बेटे के साथ गोलगमूडि के लिए रवाना हुआ। जब हम गोलगमूडि से दस किलोमीटर दूरी पर नेल्लूर पहुँचे तब उसकी तबियत बहुत ही गंभीर थी। मैंने उसे उपचार के लिए दो दिन नर्सिंग होम में रखा लेकिन उसकी तबियत और बदतर हो गई। इसलिए उसकी गंभीर बीमारी के बावजूद मैं मेरे बेटे को गोलगमूडि लाने की जोखिम उठाई। पुनः एक बड़ा आश्चर्य हुआ हमने पुण्य और पवित्र भूमि पर हमारे कदम पड़ते ही जादू की तरह सभी बीमारी छूमंतर हो गई। मैं समझ गया कि श्री स्वामी जी ने मेरा वचन रखने के लिए मुझे प्रबोधित किया और मैंने उनसे क्षमा की याचना की।

पूसल जयम्मा, आत्मकूर, नेल्लूर जिला का रिपोर्ट इस तरह है -

वर्ष 1985 में मेरा उण्डुकपूच्छ (अँपेंडेसाइटिस) का ऑपरेशन हुआ। वर्ष 1986 से भयंकर पेट दर्द के कारण मेरे पेट का बड़ा ऑपरेशन हुआ था। दो माह के बाद बाज़ू में बड़े फोड़े हुए जैसे लग रहे थे। असहनीय दर्द हो रहा था और दवा से कोई लाभ नहीं था। डॉक्टर ने कह दिया था कि तीसरी बार शल्यक्रिया (ऑपरेशन) करना जोखिम भरा था। मैंने श्री स्वामी जी के चरण कमलों में शरण ली। धीरे-धीरे मेरा दर्द कम हो गया और मैंने श्री स्वामी जी को 108 बार परिक्रमा (प्रदक्षिणा) की थी। मैं गोलगमूडि में 40 दिन रहा। मैंने मेरी दुर्दशा भक्तों में से एक भक्त श्री कारि राम स्वामी जी को बताई। उनतीस वे दिन रामस्वामी जी के सपने में श्री स्वामी जी आए और मेरे पेट का आँपरेशन कर मेरे फोड़े को दबा रहे थे। चार दिनों के भीतर मेरे सभी फोड़े ठीक हो गए। आज तक अब मेरा स्वास्थ्य अच्छा है।

एस.के. मस्तान, आयु 16 वर्ष, दसवीं कक्षा का छात्र कट्टुबाडि पल्ली, सैदापुरम मंडल, नेल्लूर जिला लिखता है :-

अक्तूबर 1987 में उन्हें बुखार, सिर दर्द, गले से छाती तक भयंकर दर्द था। मैं न बैठ पाता और लेट पाता था। वांतियों के कारण पेट में अन्न का एक दाना भी नहीं रहता था। परिणाम स्वरूप मैं सूख कर काँटा हो गया था। दो माह हमने एलौपेथी सहित सभी तरह का उपचार नेल्लूर में किया था लेकिन उससे कोई लाभ नहीं हुआ। एक दिन हमारे गाँव की वृद्ध महिला ने मुझे मेरे स्वास्थ्य के लिए भगवान श्री वेंकय्या स्वामी जी की प्रार्थना करने की सलाह दी। हमारे पास श्री स्वामी जी का छायाचित्र नहीं था। मेरी माँ ने श्री स्वामी जी के नाम अगर बत्ती जलाई और निवेदन किया कि अगर मेरा बेटा स्वस्थ हो जाएगा तो तुम्हारे दर्शन के लिए मैं उसे गोलगमूडि ले आऊँगी। चमत्कार ! पाँच मिनट में मेरा सभी दर्द ग़ायब हो गया और मैं सामान्य रूप से खाना खाने लगा था।

हमारे व्रत के अनुसार अगली सुबह हम गोलगमूडि के लिए

रवाना हुए। बस रोड तक आने के लिए हमें पाँच किलोमीटर चलना था। मेरे पिता जी और माता जी ने मेरी बग़ल में पकड़ कर मुझे गाँव की बाहरी सीमा तक धीरे-धीरे लाया। हमने प्रार्थना की " हे स्वामी ! हमारा व्रत पूर्ण करने के लिए हमें गोलगमूडि ले चलें।" मुझे नहीं मालूम मुझमें कहाँ से शक्ति आ गई, मैं पाँचों किलोमीटर अंतर किसी की भी सहायता लिए बिना चला और शाम के चार बजे तक हम गोलगमूडि पहुँच पाए। उस दिन से मुझे जब भी समय मिलता है, मैं श्री स्वामी जी की प्रार्थना, श्री स्वामी जी की पूजा और उनके नाम का जप (गुणगान) करता हूँ। मैं फ़ुर्सत का समय खेल और दोस्तों में नहीं गवाता। मैं खुद अकेला रह कर एकांत स्थान में स्वरचित गीतों से गुणगान करता हूँ। छह माह के बाद मुझ में थोड़ा आलस्य आया और मैं मेरे दोस्तों के साथ घूमने लगा। एक दिन श्री स्वामी जी ने सपने में मुझे प्रबोधित किया; " क्या, यह सब ज़रूरत पूर्ण होने तक ही था?" इससे मैं नींद से जाग उठा और उत्साह से मेरी साधना शुरू की।

इस वर्ष मैं एक मुस्लिम संत की पताका शोभायात्रा का आयोजन करना चाहता था जो ग्रामीण राजनीति के कारण पिछले चार वर्षों से बंद पड़ी थी। मैंने कुछ चंदा भी इक्कट्ठा किया था। इस अवसर पर दंगा फ़साद के डर से इस मसले में हस्तक्षेप न करने का सुझाव मुझे कई लोगों ने दिया था। मैंने इस मसले में प्रार्थना की कि श्री स्वामी जी निर्णय दें। दयालु श्री स्वामी जी ने मेरे सपने में कहा "क्या, तुम मेरी शक्ति को जानते नहीं? डर कैसा? जारी रखे। मैं यहाँ हूँ।" मैं अपने कार्य में आगे बढ़ा। सभी कार्य सुलभता से शांति पूर्ण हुए। बाद में यह पता चला कि कूप्रसिध्द पियक्कडों ने भी उस दिन शराब नहीं पी थी।

दूसरे दिन दोपहर 1 बजे जब मैं सो रहा था। वृद्ध और दुबले बदन, लम्बे पाँव वाला व्यक्ति मेरे घर आया। उन्होंने मेरे माता जी द्वारा दिया अन्न खाने से और पेय पीने से इन्कार किया। उसने मेरी माँ से थोड़ा तम्बाकू और पचास पैसे लिए और वापस जाने लगा। मेरी माता जी और पड़ोस की महिलाओं ने उन्हें बाहु को पकड़ा और

उन्हें गली पार कराई। जब उन्होंने बुढ्ढे बाबा का हाथ छोड़ा और वापस लौटीं। वे अदृश्य हो गए। मैं नींद से जागा और उनके लिए संपूर्ण गाँव छान डाला, कोई भी उन्हें नहीं देख पाए। इस तरह उन्होंने मेरे कार्य और संपूर्ण गाँव पर कृपा की।

एक दिन मेरे फूँस के घर में सत्संग चल रहा था। भारी बारिश के कारण छत से पानी टपक रहा था। सभी भक्त घर में बैठे थे। मैंने श्री स्वामी जी से पूछा हे ! स्वामी जी ! ओ दयालु स्वामी जी ! अगर आप हमारे साथ हैं तो इसके बाद हमारे घर में पानी बिल्कुल नहीं टपकना चाहिए।" सभी को बहुत बड़ा अचंभा हुआ; बाहर बारिश हो रही थी फिर भी उस क्षण से छत से पानी टपकना बंद हो गया। यह सामान्यतः देखा जाता है कि बारिश बंद होने के बाद भी घास फूँस के घर की छत से पानी टपकते रहता हैं।

मैं एक दिन बरामदे में बैठकर श्री स्वामी जी की जीवनी पढ़ रहा था। मेरे गाँव का साँड़ एक गाय का पीछा कर रहा था और वे मेरे घर के पार चले गए। मैंने श्री स्वामी जी की प्रार्थना की " स्वामी जी !यदि तुम सभी जीवित प्राणियों में विद्यमान हो तो यह बैल आधे घंटे के भीतर वापस आकर थोड़े समय के लिए यहाँ खड़ा रहना चाहिए। मुझे बहुत बड़ा आश्चर्य हुआ; कुछ ही मिनटों में उसने मेरे द्वार पर रखा गया चारा खाया और पानी पी कर चला गया। इस तरह फिर एक बार श्री स्वामी जी ने सिद्ध किया कि वे सभी प्राणियों में हैं और मेरे साथ भी थे।

ओम स्वामी ये नमः

श्री स्वामी जी के कथन :-

1. भूखे को खाना दो.। लेकिन भरे पेट को नहीं।
2. यदि आप श्री स्वामी जी के यहाँ पूरे विश्वास से आएँगे तो जो भी आपकी इच्छा होगी वह पूर्ण हो जाएगी।
3. आप मान लीजिए कि वेंकय्या सभी प्राणियों में हैं।
4. यदि तुम मुझे भूलेंगे फिर भी मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा।
5. वह क्या है ? जो मैसूर के महाराज के दर्शन से आपको मिला? आपके पास क्या वहीं हैं जो आपने बोया था।
6. व्यक्ति की श्रद्धा के अनुसार मैं साथ दूँगा।
7. हज़ारों लोगों में से भी मैं मेरे सच्चे भक्तों को पहचानूँगा। जैसे की चरवाहा अपनी भेड़ों को पहचानता है।
8. सभी से समान प्यार करने से आप भगवान को पहचान पाने योग्य होंगे।
9. मैं सभी लोगों के कल्याण के लिए ज़िम्मेदार रहूँगा जो मेरे नाम से अन्न का ग्रास दें और खिलाए।
10. जब भक्त मंत्र की माँग करते हैं तब श्री स्वामी जी ने कहा " मंत्र और तंत्र कुछ नहीं है, सिर्फ विचारों पर चले (बुद्धि से काम लें)
11. यदि संत धर्म का पालन करें तो वह कोई बड़ा काम नहीं। वह महान है जब संसारिक व्यक्ति धर्म का पालन करें।
12. ब्याज पर धन उधार देते वक्त भी हमें धर्म का पालन करना चाहिए।
13. हमें महानता, सरलता और सद्गुरु की सेवा प्राप्त करनी चाहिए।
14. एक चवन्नी चोरी करने से आपको दस रुपये की हानि होगी।
15. यदि हम लाभ में हिस्से की आशा करेंगे तो हमें पाप का भी भागी होना पड़ेगा।
16. दूसरों को त्याग करने का उपदेश देने से स्वयं त्याग करना अच्छा है।

यद्यपि मैं हिंदी भाषा में प्रवीण नहीं हूँ। मैं मेरे सद्गुरु के कीर्ति गान गाए बिना नहीं रह सकता हूँ। मैं विद्वानों से निवेदन करता हूँ कि वे इसमें भक्ति भाव समझें और मेरी भाषा की गलतियों को माफ़ करें। मेरा विश्वास है कि प्यार करने वाले पिता की तरह श्री स्वामी जी मेरी बातों से प्रसन्न होते हैं इसलिए वे मेरे कार्य में मदद करते हैं। जिन्होंने इसे अनुवाद करने में, टंकण करने में और मुद्रण में मदद की उनको मैं धन्यवाद अदा करता हूँ। मैं श्री स्वामी जी से प्रार्थना करता हूँ कि उनको शांति और ज्ञान का आशीष दें।

हमसे स्वामी जी की क्या अपेक्षाएँ हैं?

क्या यह सभी बाहरी श्रृंगार और मूर्ति पूजन श्री स्वामी जी हम से चाहते हैं ? जब बच्चे लंबी बीमारी ग्रस्त रहते है तब मानव माता-पिता अच्छी तरह खाना नहीं खा सकते। श्री स्वामी जी जो प्यार और अनासक्ति के एक अवतार हैं। क्या हमारी बाहरी सेवा से उन्हें संतोष और शांति मिलेगी ? इस पर गहन विचार कीजिए और आपकी सेवाएँ भगवान या श्री स्वामी जी को प्रदान कीजिए । उन्होंने निः संकोच घोषित किया कि वे सभी प्राणियों में विद्यमान हैं । यद्यपि उनकी दैवी लीलाओं के माध्यम से वे हमें सह प्राणियों के बारे में मानवता और प्यार से प्रोत्साहन देने के लिए स्मरण करते रहते हैं। हम कुत्तों को प्यार से खिलाते हैं लेकिन अपनी बहूओं को नहीं खिलाते। हम मुर्ग़े को बली चढ़ाते हैं। हम रिश्वत लिए बिना मिसिल आगे नहीं बढ़ाते। क्या हम किसी समय महसूस करते हैं कि गैर कानूनन आशुतोष के लिए मिसिल को अपनी मेज पर रोककर बहुत सारे सह-आदमियों को हम परेशान कर रहे हैं ? पर्यवेक्षकों को उसके कार्य से दूर ले जा कर हम परीक्षा में नक़ल करते हैं। नक़ल करने के लिए क्या किसी भी समय हम विचार करते है कि एक बुद्धि मान छात्र जिसने अच्छी पढ़ाई की ; अपनी बुद्धि को तीक्ष्ण किया; वह पीछे रहकर बेरोज़गार रहेगा ? यदि हम अप्रत्यक्ष रूप से कई लोगों को दुख पहुँचाएँगे और गोलगमूडि में बड़ा और भपकेबाज दिखावा करेंगे तो क्या सही में श्री स्वामी जी खुश हो जाएँगे। दुख में

की मन्नत पूर्ण करने के बाद क्या हमें श्री स्वामी जी को भूलाना चाहिए ? जब तक हम पर कुछ दूसरी विपत्ति नहीं आती तब तक हम श्री स्वामी जी को याद नहीं करते।

निर्दयी भावना से किए जाने वाले प्रदर्शनों के लिए क्या श्री स्वामी जी वहाँ बैठे रहेंगे ? वे दयालुता के अवतार होने के कारण वे अपने बच्चों को अपनाते हैं। उनकी समस्याओं में कई बार मदद करते हैं। ये सब उनके दिलों में नेक मानवता का अंकुरण करने के लिए ही है। यदि हम अपनी आदतों में कोई परिवर्तन किए बिना अपने साथियों और प्राणियों के प्रति कठोर बने रहेंगे तो एक स्थिति में वे हमें हमारी किस्मत पर छोड़ देंगे। उस दिन हमारी कोई भी मदद नहीं करेंगे। सही दक्षिणा जो वे चाहते हैं वह है धर्म का अनुसरण जिसकी उन्होंने हमें सीख दी और उनके संपूर्ण जीवन भर अवलंब किया। हमें श्री स्वामी जी को सभी जीवों में देखना चाहिए। उनकी कृपा से उनके प्रति सहानुभूति महसूस करनी चाहिए। सत्य व्रत लें और सर्वशक्तिमान की कीर्ति का गायन करें।

ये किताबें अपने मित्रों को वितरित करें और श्री स्वामी जी की कृपा से उनकी समस्याओं को सुलझाने में उनकी मदद करें।

आश्रम के बारे में दो शब्द

भगवान श्री वेंकय्या स्वामी जी का समाधि मंदिर गोलगमूडि में है। यह गाँव आंध्र प्रदेश में नेल्लूर से पंद्रह किलोमीटर दूरी पर है। हर दिन कई सौ लोगों का समूह उनके दर्शन लेते हैं। शनिवार के दिन हज़ारों लोग यहाँ आकर श्री स्वामी जी को उनके श्रद्धा सुमन अर्पण करते हैं। सभी भक्तों को हर दिन दो बार भरपेट खाना खिलाया जाता है। शनिवार को दोपहर बारह बजे से शाम चार बजे तक सभी भक्तों के लिए भोजन सेवाएँ उपलब्ध रहती हैं। नेल्लूर आर. टी. सी. बस स्टँड से गोलगमूडि के लिए बस सुविधा है।

तेलुगू भाषा में श्री स्वामी जी की जीवनी पर कुल सात किताबें हैं। अन्य राज्यों के लोगों को लाभान्वित करने के लिए अंग्रेजी से अनूदित यह प्रथम हिंदी पुस्तक है। श्री स्वामी जी की कृपा से हम क़रीब 400 पृष्ठों की उनकी सम्पूर्ण जीवनी हिंदी में अनुदित करना चाहते हैं। हम उदार लोगों के सहयोग का खुले दिल से स्वागत करते हैं।

प्रकाशित कर्ता:

श्री साई मास्टर सेवा ट्रस्ट,

गोलगमूडि - 524 321,

नेल्लूर जिला,

आंध्र प्रदेश, भारत